देवास-म.प्र.। शान्तिदूत युवा साइकिल यात्रा पर दीप प्रज्वलित करते हुए नगर के पार्षद एवं पूर्व महापौर ठाकुर जयसिंह, राजू खंडेलवाल। साथ हैं ब्र.कु.प्रेमलता तथा अन्य।

छिंदवाड़ा-म.प्र.। शिक्षक दिवस के अवसर पर दीप प्रज्वलन करते हुए शिक्षा विभाग की सह-संचालिका जया पिल्लई, भारत भारती विद्यालय की प्राचार्या शोभा मिश्रा, पार्षद मनीष तिवारी, ब्र.कु.गणेशी एवं ब्र.कु.ओमप्रकाश।

गोपाल नगर-कटनी। सीनियर सिटिज़न डे पर नि:शुल्क शिविर का उद्घाटन करते हुए डॉक्टर्स एवं ब्र.कु.भगवती।

सतना। चैतन्य देवियों की झांकी में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संचालक श्री कृष्ण महेश्वरी, अरुण श्रीवास्तव। साथ हैं ब्र.कु.मीना एवं ब्र.कु.प्रज्ञा।

सादाबाद। उपजिलाधिकारी मदन चन्द्र दूबे के साथ ज्ञान चर्चा करते हुए ब्र.कु. डॉ.अल्का एवं ब्र.कु.सीमा।

दिल्ली-मालवीय नगर। शान्तिदूत युवा साइकिल यात्रा के दौरान असिसटेंट कमिश्नर ऑफ पुलिस महिपाल सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुन्दरी, ब्र.कु.नीरू।

यदि भगवान तुम्हारा दोस्त बन जाए तो....

यदि भगवान धरा पर आ जाए, तुम्हारा उससे मिलन हो जाए और वह तुम्हारा दोस्त बन जाए, यह कल्पना ही कितना सुख देती है और यदि सचमुच ही ऐसा हो गया तो....

यह सम्पूर्ण सत्य है कि खुदा दोस्त इस समय सच्ची दोस्ती निभा रहा है। अब वह मनुष्यात्माओं की मदद करने के लिए तत्पर है, जिनका उससे हज़ारों वर्ष का प्यार था, वह इस प्यार का रिटर्न देने के लिए हाज़िर है।

शास्त्रों में भगवान के माता-पिता, बन्धु-सखा होने की कल्पना की गई है परन्तु किसी का भी उससे इस तरह का नाता नहीं जुड़ा। किसी-किसी भक्त ने उसे प्रियतम के रूप में देखा। किसी ने उसे अपना सदगुरु भी माना, परन्तु खुदा को दोस्त बनाने का विवेक भक्तों के पास नहीं था।

दोस्ती के नाम पर तो श्री कृष्ण और अर्जुन का ही वृत्तान्त है और अन्य किसी का नहीं। सर्व विदित है कि दोस्ती के कारण ही पाण्डवों की विजय हुई, उनकी सुरक्षा हुई। श्री कृष्ण यदि अर्जुन के मित्र न होते तो युद्ध का परिणाम कुछ और ही होता।

भगवान और भक्त की बात तो अलग है, परन्तु भगवान से दोस्ती, यह स्वयं में सर्वोच्च उपलब्धि है। इस सम्बन्ध के लिए चाहिए प्यार और समानता। दोस्ती समानता के स्तर पर ही होती है। एक तरफ भगवान सम्पूर्ण पावन और दूसरी तरफ भक्त, तो दोस्ती की कोई गुंजाइश ही नहीं। परन्तु एक ओर भगवान योगेश्वर और दूसरी ओर उसकी आज्ञा पर चलने वाला श्रेष्ठ योगी, तो दोनों की दोस्ती एक आश्चर्यजनक उदाहरण बन जाती है।

दोस्ती जोड़ लेना तो सहज है, परन्तु दोस्ती निभाना, इसी में ही सम्पूर्ण ईश्वरीय राज़ समाहित हैं। दोस्ती में एक-दूसरे पर कुर्बान होना होता है, दोस्ती में समय पर एक-दूसरे को मदद करनी होती है, दोस्ती में पारदर्शी दिलों का मिलन होता है। तो कर लें आप भी भगवान से दोस्ती..., बना लें उसे अपना..., उसका सबकुछ आपका हो जाएगा। जब भी आप उसे याद करेंगे, वह नंगे पाँव दौड़ा चला आएगा। सोचो, भगवान ही यदि आपका हो जाए तो..., यदि वह आपके सिर पर छत्रछाया बन जाए तो? क्या पसन्द है आपको ऐसी मित्रता...?

वह मित्रता केवल एक ही बार होती है। हमने उसे अपना सच्चा दोस्त बनाया है। हमारे लिए यह मित्रता चारों युगों में सर्वश्रेष्ठ वरदान है। इस मित्रता में परम आनन्द है। वह हमारी मदद को सदा तैयार रहता है, उसने आजतक हमें हज़ारों बार मदद की है, उसकी मित्रता पर हमें गर्व है। भगवान जैसे दोस्त को पाकर अब हमें अन्य किसी और को देखने की आवश्यकता ही नहीं रही। एक ने ही हमारे जीवन को भरपूर कर दिया।

तो लाभ उठा लें इस स्वर्णिम अवसर का, ऐसा मौका पूरे कल्प में दोबारा कभी नहीं मिलेगा।

तो क्या विचार है आपका, भगवान तुम्हारा दोस्त बनकर तुम्हारे पास आया है। वह तुम्हें खुश देखना चाहता है। करेंगे सर्वशक्तिवान से दोस्ती?

कर्म फल का त्याग ही शुद्ध सन्यास

श्रीमद्भगवद् गीता के अठारहवें अध्याय के अंदर और आगे के जीवन के अंदर जो विशिष्ट बातें हैं कि तीन प्रकार की बुद्धि, तीन प्रकार का त्याग, तीन प्रकार के सुख, तीन प्रकार की धारणा की शक्ति, तीन प्रकार के कर्म अर्थात् किस प्रकार का जीवन हमें जीना है, ये हमें खुद निश्चित करना होगा। यदि हमें एक सात्विक जीवन जीना है, तो हमारी बुद्धि कैसी होनी चाहिए? हमारी धारणा शक्ति कैसी होनी चाहिए? हमारे कर्म कौन-से होने चाहिए और उससे उपलब्ध सुख किस प्रकार का होता है? इस प्रकार की तीन-तीन बातों को और स्पष्ट किया है। सारांश में जीवन जीने की विधि बतायी है। अठारहवां अध्याय पूरे सत्रह अध्यायों का सार है। सन्यास की परम सिद्धि क्या है, उसको भी स्पष्ट किया है। सन्यास का मतलब ये नहीं कि सब कुछ छोड़ देना, अपने कर्तव्य को छोड़ना, अपनी जिम्मेदारियों को छोड़ना, उसको सन्यास नहीं कहा जाता है।

मनुष्य के अंदर रही हुई आसुरी वृत्तियों का सन्यास, इसकी विशेष प्रेरणा दी है। यहाँ त्याग का अर्थ और मानवीय चेतना तथा कर्म पर प्रकृति के गुणों का प्रभाव समझाते हैं। इस अध्याय में वर्णित संकेत हमारे आंतरिक व्यक्तित्व का बोध कराते हैं कि किस प्रकार के व्यक्तित्व को हमें अपने भीतर से निर्माण करना है और समय प्रति समय हम इन सूचकों के आधार पर अपने व्यक्तित्व का अवलोकन करें कि ये सात्विक हैं, राजसिक हैं या तामसिक हैं। उसके आधार

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

पर स्वयं का परिवर्तन करें।

श्रीमद्भगवद्गीता की महिमा तथा उसके स्तर का वर्णन इस प्रकार समझते हैं। धर्म का सर्वोच्च मार्ग परमात्मा की शरणागति है अर्थात् स्वयं को समर्पित कर देना।

भगवान से अर्जुन पूछता है कि सन्यास और त्याग का यथार्थ स्वरूप क्या है? इन दोनों के बीच का अंतर स्पष्ट करने के लिए उसने प्रार्थना की। भगवान कहते हैं - कर्म तीन प्रकार के हैं। यज्ञ, दान और तप। ये कर्म त्याग करने के योग्य नहीं है। इंसान को त्याग क्या करना चाहिए, किस बात का सन्यास करना चाहिए ये ज्ञान होना बहुत ज़रूरी है। जो विशेष जीवन के अंदर उपयोगी चीज़े हैं, उसका त्याग करने की बात कही है। यज्ञ, तप और दान ये तीनों कर्म त्याग करने के योग्य नहीं है, क्यों? क्योंकि ये मनुष्यों को भी पवित्र करने वाले हैं। नियत कर्म को कर्तव्य समझकर इसमें आसक्ति और फल को त्यागना ये सात्विक त्याग है अर्थात् हर जगह संपूर्ण गीता के अंदर यह बात हमनें बार-बार सुनी है कि आसक्ति का त्याग करो। जो फल है वो परछाई की तरह हर कर्म के साथ जुड़ा हुआ ही है। फिर फल की कामना करना या उससे अधिक की कामना करने से, क्या वो प्राप्त हो जायेगा? कर्म हम थोड़ा करें और फल अधिक चाहें, तो क्या ये मिलेगा? अरे जो परछाई जैसी होगी, उसी अनुसार वो प्राप्त होना है। उसकी इच्छा को लेकर के कर्म करना, ये तो यथार्थ नहीं है। इसमें हम अपने विचारों की शक्ति को यूं ही व्यर्थ गवां रहे हैं। जिसने जितनी भावना से जैसा कर्म किया, उसका फल वैसे ही उसके साथ जुड़ जाता है। इसलिए भगवान बार-बार कहते हैं कि इसमें अपना समय, व्यर्थ क्यों गवां रहे हो? आसक्ति और फल के त्याग को ही सात्विक त्याग माना गया है। मनुष्य कर्म कर भी रहा है लेकिन यह भी समझता है कि अरे, ये तो दु:ख भरा जीवन है। अर्थात बार-बार उस दु:ख के प्रति अफसोस करता रहता है या शारीरिक कष्ट के भय से इसका त्याग कर देता है। सोचता है ये कर्म मैं नहीं करूंगा, पता नहीं कहीं मुझे शारीरिक कष्ट भोगना पड़ेगा। इससे शारीरिक कष्ट उठाना पड़ेगा या मुझे दु:ख उठाना पड़ेगा। अर्थात् नियत कर्म को दु:ख समझ करके करता है। ये समझकर के उस कर्म को त्याग करते हैं, तो ये राजसी त्याग हो गया जिसमें फल की प्राप्ति नहीं होती है।

नियत कर्म को जो मोह वश त्याग करता है। जैसे - आज एक माँ अपने बच्चे के मोह वश कुछ अगर त्याग भी करती है, तो वह त्याग तामसिक त्याग हो गया। क्योंकि ये मोहग्रस्त त्याग है। सम्पूर्ण कर्म का त्याग संभव नहीं है। परंतु जो कर्म के फल के त्यागी हैं यही शुद्ध सन्यास है। यह सन्यास चरम उत्कृष्ट अवस्था है। भगवान ने स्पष्ट किया कि तीन प्रकार के त्याग कौन से हैं। उसमें सात्विक त्याग कैसे सहज हम अपने जीवन के अंदर ले आयें। राजसिक त्याग माना, जो कष्ट समझ करके उसको छोड़ देते हैं। इसमें कोई त्याग नहीं हुआ। जहां मोह वश कुछ त्याग कर भी देते हैं तो ये तामसिक त्याग में आ जाता है। क्रमश: